TRY
548
H
595
(P)
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1184/10/21
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 545

19-1
891.431
Sh23M

5-45

10 DEC. 1930
DEPARTMENT

नौजवान ग्रन्थमाला का आठवां पुष्प

* वन्देमातरम् *

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें
अथवा

आज़ादी का बिगुल

संग्रहकर्ता—आर० एन० शर्म्मा।

प्रकाशक—अग्रवाल बुकडिपो खारीबावली देहली

द्वितीय बार]   जून सन् ३०   [मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 545
Date 13.12.71
GOVT. OF INDIA

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

छपा

बिलखती विधवा [नाटक]

आगरे में क्रान्ति

[जिसका पहिला एडीशन हाथों हाथ बिक गया ।]

एक अग्रवाल सेठ का छोटी उमर में अपने बेटे की शादी करना। शादी के चन्द दिन बाद लड़के का देहान्त हो जाना। उसकी विधवा स्त्री पर सास नन्द का अत्याचार। उसका अत्याचार सहते २ घर से निकलने का विचार करना। वह विचार सुसर को मालूम होना। सुसर का विधवा को ज़हर देने का विचार। ईश्वरी कोप से सुसर का खुद जहर पी लेना। बाद में सौतेली सास का उसको घरसे निकाल देना, विधवा का पुरोहित के पास जाना और पुनर्विवाह के लिये प्रार्थना करना। पुरोहित का विरोध। इस पर विधवा का अदालत में जाना और एक देश भक्त की मारफत नेशन पर दावा। सनातन धर्मियों का घोर विरोध। अदालत में दोनों तरफ की बहसें। शास्त्रोक्त प्रमाण, विधवा का रोमांचकारी बयान, जूरियों की राय, अदालत का जजमेंट पढने लायक है।

यह नाटक २०००० की जनता में "आनन्द-नाटक" की तरफ से आगरे में खेला जा चुका है और **ग्वालियर महाराज** ने भी अपने नाटक घर में छपने से प्रथम खिलाया था। पूरे हालात पढ़ियेगा। पृष्ठ संख्या २५० है। अन्दर अदालत का चित्र और तीन अन्य चित्र हैं। टाइटिल पर तिरंगा चित्र। मूल्य १॥) डाक खर्च अलग। चार पुस्तक मनीआर्डर से दाम भेजने पर ६) रु० में मिलेंगी।

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली, देहली।

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें

अथवा

आज़ादी का बिगुल

देश भक्त का प्रलाप १।

हमारा हक़ है हमारी दौलत,
किसी के बाबा का ज़र नहीं है।
है मुल्क भारत वतन हमारा,
किसी की ख़ाला का घर नहीं है॥
हमारी आत्मा अजर अमर है,
निसार तन-मन स्वदेश पर।
है चीज़ क्या जेलो गन मशीनें,
कज़ा का भी हम को डर नहीं है॥
न देश का जिस में प्रेम होवे,
दुःखीके दुःख से जो दिल न रोवे।
खुशामदी बन के शान खोवे,
वो ख़र है हरगिज़ बशर नहीं है॥
हुक़ूक़ अपने ही चाहते हैं,
न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ खुदगरज़ किसी की,
भलाई मद्देनज़र नहीं है॥
हमारी नस-नस का खून तूने,
बड़ी सफाई के साथ चूसा।

है कौनसी तेरी पालिसी वह,
कि जिसमें धोखा ज़हर नहीं है ॥
बहाया तूने है खून उसी का,
तेरी रग रग में अन्न जिसका ।
बतादे बेदर्द तूही हक़ से,
सितम ये है या कहर नहीं है ॥
जो बेगुनाहों को है सताता,
कभी न वह सुख से बैठ पाता ।
बड़े बड़े मिट गये सितमगर,
क्या इसकी तुझको खबर नहीं है ॥
संभल संभल अब भी ओ लुटेरे,
है तेरे पापों का अन्त आया ।
कि जुल्म करने में तूने ज़ालिम,
ज़रा भी रक्खी कसर नहीं है ॥
गज़ब है हम बेकसों की आहें,
ज़मीन और आसमां हिलादें ।
गलत हैं समझे कमल जो समझे,
कि आह में कुछ असर नहीं है ॥

भजन नं० २

कौन सकती है नहीं सरकार बन्देमातरम् ।
हम गरीबों के गले का हार बन्देमातरम् ॥ १ ॥
सर चढ़ोंके सरमें चक्कर उस समय आता ज़रूर ।
कान में पहुंची जहां झनकार बन्देमातरम् ॥ २ ॥

हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर।
आज तो चिल्ला रहा संसार बन्देमातरम् ॥ ३ ॥
जेल में चक्की घसीटे भूक से हो मर रहा।
उस समय हो बक रहा बेज़ार बन्देमातरम् ॥ ४ ॥
मौत के मुंह पर खड़ा है कह रहा जल्लाद से।
भोंक दे सीने में वह तलवार बन्देमातरम् ॥ ५ ॥
डाकटरों ने नब्ज़ देखी, सर हिला कर कह दिया।
होगया इस को तो ये आज़ार बन्देमातरम् ॥ ६ ॥
ईद होली और दशहरा, शबरातसे भी सौ गुना।
है हमारा लाडला त्यौहार बन्देमातरम् ॥ ७ ॥
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा।
फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम् ॥ ८ ॥

गज़ल आज़ादी का पैगाम ३

आबरू पर मुल्क की हम सब फिदा हो जायंगे।
कांग्रेस पर हर तरह से हम फिदा हो जायंगे ॥
हासिल आजादी करेंगे जिस तरह भी हो सके।
देख लेना दास के नक़्शे कदम हो जायंगे ॥
क्यों हमें कमजोर समझे हो निहत्था जान कर।
गर बिगड़ बैठे तो फिर हम इक बला होजायंगे ॥
आग से मत खेलना हम हैं वो शोले आग के।
गर भड़क उठे तो पागमें कज़ा हो जायंगे ॥
अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है।
आगया है वक्त अब नाले रसां हो जायंगे ॥

माल की होगी जरूरत तो लुटा देंगे गौहर।
मुल्को मिल्लत के लिये हम सब गदा होजायंगे॥
इक नये अन्दाज से किश्ती चलेगी मुल्क की।
और जवाहर लाल नेहरू नाखुदा हो जायंगे॥
आने वाला वक्त है तो देख लेना दोस्तो।
आज जो आजिज़ हैं कल वह क्या से क्या होजायंगे॥

इन गांधी टोपी वालों ने ४

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया इन गांधी टोपी वालों ने॥
सदियों की गुलामी में फँस कर, अपने को भी जो भूल चुके।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ने॥
सर्व स्वदेश हित कर दो तुम, अर्पण सपूत हो माता के।
सर्बस्व त्याग का मन्त्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
अनहित में भारत माता के, जो लगे देश द्रोही बन कर।
उन को सत-पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
पट बन्द हुये कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरखे सा चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपी वालों ने॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सिर धुन बतलाते हैं।
खद्दर से प्रेम किया जब से, इन गांधी टोपी वालों ने॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण पियारे हैं।

नेता गांधी को बना लिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
"अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो।
माना गांधी का कहना ये, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
है विकट समस्या तीस की भी, उसको भी हल कराना होगा।
जरिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को राजा, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने ॥

भजन चरखा ९

चला दो चर्खा हर एक घर में, ये चर्ख तब तुम हिला सकोगे।
बंधा तभी सिलसिला सकोगे, उन्हें कबड्डी खिला सकोगे ॥
हमारे चरखे में ऐसा फन है, जो आजकल की मशीनगन है।
वो मानचेस्टर वो लंकाशायर, का जीत इस से किला सकोगे ॥
रुई न भारत की हो रवाना, बुने स्वदेशी का ताना बाना।
इसी तरह से विदेशी बणिज को, आप फांसी दिला सकोगे ॥
न पट विदेशी का लो सहारा, शरीर चाहे रहे उघारा।
बचे बहत्तर करोड़ रुपया, तब आने बच्चे जिला सकोगे ॥
मिला लो भाई गले लगा के स्वदेशी का तुम सबक पढ़ा के।
विदेशी चीजों को दो हटा के, फिर चैन बंशी बजा सकोगे ॥

महात्मा गांधी जी की ११ शर्तें

महात्मा गांधीकी ग्यारह शर्तें, अमलमें लाकर दिखाना होगा।
प्रजाके आगे तुझे, सितमगरोसर अपना अबतो झुकाना होगा॥
१. नशीली चीज़ें शराब, गांजा, अफ़ीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटाके इनको खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा॥
२. हमारे सिक्के की दर को साहब! घटा-बढ़ा करके लूटते हो।
अब एक शिलिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा॥
३. लगान आधा करो ज़मीं का, किसान जिससे ज़रा सुखी हों।
महकमा इसका हमारी कौंसिलके ताबे तुमको रखाना होगा॥
४. फ़िज़ूल ख़र्ची, बिला ज़रूरत, जो फ़ौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं तो आधा उसको, ज़रूर साहब! घटाना होगा॥
५. बड़े-बड़े, भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफ़सर।
उसे मुआफ़िक़ लगान आधा या उससेभी कम कराना होगा॥
६. स्वदेशी कपड़े करें तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावें।
विदेशी कपड़े पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा॥
७. समुद्र-तट का जहाज़ी बाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के अधीन हो कर चलाना होगा॥
८. जिन्हें कतल, या कतल-इरादा, सजा मिली हो, उन्हें न छोड़ें।
बकाया कैदी पुलीटिकल सब, तुरन्त साहब छुड़ाना होगा॥
९. उठा लिये जायं राजनैतिक जो मामले चल रहे मुलक पर।
जो इकसौचौबिस दफा अलिफ है. उसेतो बिल्कुल मिटाना होगा
अठारह का एक्ट रेगुलेशन, तथा दफा पेसी सब उठाकर।
जिलावतन सब हमारे भाई, वतन में साहब! बुलाना होगा॥
१०. महकमा खुफिया-पुलिस उड़ादो, या करदो उसको प्रजाके ताबे
११. हमें भी बंदूक और पिस्तौल, बरा हिफ़ाज़त दिलाना होगा॥
हमें सबर होगा बस उसी दम जब होंगी पूरी ये ग्यारह शर्तें।
सहे हैं ज़ुल्मो सितम हज़ारों न ज्यादा हमको रुलाना होगा॥

राष्ट्रीय झण्डा ७।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥ टेक ॥

सदा शक्ति सरसाने वाला, प्रेम सुधा बरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला मातृ-भूमि का तन मन सारा ॥ झं०
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण क्षण में।
कांपे शत्रु देखकर रन में, मिट जाये भय संकट सारा ॥ झं०
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय
बोलो भारतमाता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा। झं०
आओ प्यारो वीरो आओ, देश-धर्म पर बलिबलि जाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारतदेश हमारा ॥ झं०
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥

नौजवान की तमन्ना ८

मुर्दा भारत को जिला जायंगे मरते मरते।
नाम ज़िन्दों में लिखा जायंगे मरते मरते ॥
हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन।
उनका अभिमान मिटा जायगे मरते मरते ॥
जुल्म करती है हिन्द पर नौकरशाही।
उसकी बदचाल मिटा जायंगे मरते मरते ॥
दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवांमर्दी से।
हिन्द का सिक्का बिठा जायगे मरते मरते ॥

जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक।
एक क्या लाखों बना जायंगे मरते मरते॥
मातृ-भूमि के लिए जान निछावर कर दें।
सबक भारत को पढ़ा जायंगे मरते मरते॥
हैं तो नाचीज मगर इतनी जुरत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायंगे मरते मरते॥
दत्त, भगत, दयानन्द, तिलक, गांधी का।
सबको फरमान सुना जायंगे मरते मरते॥

शहीदों के खूं का असर ६

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
मिटायेंगे जालिमका घर देख लेना॥
किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना
झुकादेंगे गरदन को हम जेर खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुदगर्ज गोली चलाते हैं हमपर।
तो कदमोंमें उनकाही सर देख लेना॥
जो नकश हमने खींचाहै खूनेजिगर से।
वह होगा कभी बारवर देख लेना॥
किनारे पे आये भंवरसे वह किश्ती।
वह आयेगी एकदिन लहर देखलेना॥
बलायें ये जायंगी खुद सर निगूं हो।
नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना॥
खुलद ही हुआ हिन्द आज़ाद अपना।
छपेगी ये ५६ दिन खबर देख लेना॥

फांसी के तख्ते पर देशभक्तों के मनोभाव १०

कहते हैं अलविदा अब हम इस जहान को।
जाकर खुदा के घर फिर आया न जायेगा॥
अहले वतन अगरचे हमें भूल जायेंगे।
अहले वतन को हमसे भुलाया न जायगा॥
जुल्मो सितम से तंग न आयेंगे हम कभी।
हम से सर नियाज़ झुकाया न जायगा॥
इससे ज्यादा और सितम क्या करेंगे वह।
इससे ज्यादा उन से सताया न जायगा॥
हम ज़िन्दगी से रूठ कर बैठे हैं जेल में।
अब जिन्दगी से हम को मनाया न जायगा॥
यह सच है मौत हमको मिटा देगी दुहर से।
लेकिन हमारा नाम मिटाया न जायगा॥
हमने लगाई आग है जो इन्कलाब की।
इस आग को किसी से बुझाया न जायगा॥
यारो है अब भी वक्त हमें देख भाल लो।
फिर कुछ पता हमारा लगाया न जायेगा॥
आजाद हम कर न सके अपने मुल्क को।
खंजर यह मुँह खुदा को दिखाया न जायगा॥

शहीद गर्जना ११

(ले०— काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना।
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना॥

खूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुसल्लिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेलओ दमनकी प्यारो।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंज़ूर सर कटाना॥

राष्ट्रपति जवाहरलाल नं० १२

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने॥१॥
वह लाल जो मोतीलाल का है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हट करके, जगवाया वीर जवाहर ने॥२॥
अंगरेज़ों की मृगतृष्णा में, लटके थे सब भारतवासी।
पूर्ण आज़ादी का मंतर, सिखलायी वीर जवाहर ने॥३॥
दे दे स्पीचें ज़िन्दादिल, कमज़ोरी दूर भगा दी सब।
रग-रग में खूं आज़ादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने॥४॥
खोटी है राजनीत उनने, जानी है खाक विदेशों की।
समता स्वतन्त्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने॥५॥
पूंजीपति ज़मींदार करते हैं, जुल्म मजूर किसानों पर।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने॥६॥

हिंदू मुसलिम सिख जैन ईसाई पारसी भाई-भाई हैं।
सब ऊँच-नीच का विषमभेद, मिटवाया वीर जवाहरने ॥७॥
इक रोशन आग धधकती है, आज़ादी का उसके दिल में।
जिसे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥८॥
नवयुवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग विलासों में।
युवकोंकी शक्ति को इकदम उकसाया वीर जवाहर ने ॥९॥
आदर्श-चरित से वह अपने, युवकों का सरदार बना।
आजादी का ऊँचा झण्डा, लहराया वीर जवाहर ने ॥१०॥
बिजली है वाणी में जिसकी, जादू है आंखों में उसकी।
देखा जिसको एकपल भरमें, अपनाया वीर जवाहर ने॥११॥
गांधी जब आशिष दे बोले "खुद कर्क वर्नुभा में तेरा।
तब सेहरा राष्ट्रपति का सिर, बंधवाया वीर जवाहर ने॥१२॥
लखकर "प्रकाश" यह भारतका, अचरज से डूबी है दुनिया।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में मुसकाया वीर जवाहर ने ॥१३॥

वीरप्रतिज्ञा नं० १३

कसली कमर अबतो कुछ कर के दिखायेंगे।
आजाद ही हो लेंगे या सर ही कटा देंगे॥
हटने के नहीं पीछे डर कर कभी जुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे॥
बेशस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चरखे का।
चरखे से जमीन को हम यों चर्ख गुंजा देंगे॥
परवा नहीं कुछ दम की गम नहीं मातम का।
है जान हथेली पर एक दम में गवां देंगे॥

उफ तक भी जुबां से हरगिज न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम हम सर को झुका देंगे॥
सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका।
चलवाओ गन मशीनें हम सीना अड़ा देंगे॥
दिलवाओ हमें फांसी ऐलान दे कहते हैं।
खूँ से ही शहीदों के हम फौज बना देंगे॥
मुसाफिर जो 'अंडमन' के तूने बनाये ज़ालिम।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे॥

सर फरोशी की तमन्ना १४

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है अब जोर कितना बाजुवे क़ातिल में है॥
रह बरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जते ईसहरान वर्दी दूर यह मंजिल में है॥
वख्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मकतल में कातिल कह रहा है बार २
क्या तमन्नायें शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैरकी महफिल में है॥
अब न अगले वलवलेहैं और न अरमानोंकी भीड़।
सिर्फ मिटजानेकी हसरत अबदिले बिस्मिल में है॥

वीर गर्जना नं० १५

भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना ।
प्यारे वतन को इस दम आजाद है बनाना ॥
मत बुजदिलीको हरगिज तुम पासदो फटकने ।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वतन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥

यदि आप बेरोज़गार हैं

तो

निराश न हों

यदि आप बेरोजगार हैं और स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो आप हमारे यहां के १६ सफे के ट्रैक्ट क्यों न मँगा कर बेचते हो। १६ सफे के ट्रैक्ट २।) सैकड़ा व १५) हज़ार थोक व्यापारियों को भेजे जाते हैं। बिना बिकी पुस्तकें वापिस कर लेते हैं व्यौपारियों की मांग व लाभ का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। इस के अलावा बम्बई, मथुरा, हाथरस बनारस, लाहौर आदि का थोक माल बिक्री के लिये तैयार रहता है।

१. राष्ट्रीय झगडा	-)	झांसी की रानी	-)
२. आज़ादी का बिगुल	-)	शारदा बिल	-)
३. क्रान्ति की लहर	-)	गांधी की तोप	-)
४. नमक का इतिहास	-)	लल्लू का चाचा	-)
५. सत्याग्रह की तोप	-)	नकली साधू	-)
६. शहीदों की याद	-)	बिलखती विधवा	-)
७. सुदर्शन चक्र	-)	विधवा दुख दर्शन	≡)
		कांग्रेस के महापुरुष	१॥)

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली

देहली।

नारायणदास गुप्त के प्रबन्धसे द्वादश श्रेणी प्रेस, देहली में छपी।